



परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

परीक्षा का विषय : फसल उत्पादन एवं उद्यान शास्त्र
विषय कोड : 4 2 0 5
स्टीकर तीर के निशान में

पुस्तिका का क्रमांक : A- 0705347

अंकों में परीक्षार्थी का रोल नम्बर : 2 8 2 1 3 2 0 7 5

शब्दों में : दो आठ दो एक तीन दो शब्दों में

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

उदाहरणार्थ : 1 1 2 4 3 9 5 6 8
एक एक दो चार तीन नौ पांच छः आठ

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे →

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में शब्दों में

ख :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक

ग :- परीक्षा का दिनांक

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकेण्डरी सर्जि परीक्षा केन्द्र क्र. 212027

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर : केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

विद्यावती जोड़

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होले क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाए।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा : परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

26/03/18

प्रश्न क्रमांक	केवल परीक्षक द्वारा भरने के लिए	प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तियों के पृष्ठ क्रमांक	प्राप्त अंकों में
1			
2			
3			
4			
5			
6			
7			
8			
9			
10			
11			
12			
13			
14			
15			
16			
17			
18			
19			
20			
21			
22			
23			
24			
25			
26			
27			
28			

Laser/Inkjet/Copier Label A4/ST-16 99.1x33.8mmx16

des/mal

शब्दों में कल प्राप्त अंकों में

2



+

10/11/2021



योग पूर्व पृष्ठ

सन क्र.

* प्रश्न क्रमांक 1 का उत्तर *

(i) सौयाबीन ✓

(ii) श्वेत श्वेत बटन मशरूम ✓

(iii) बीज एवं झूसी ✓

(iv) जैट्रोफा करकस ✓

(v) 16 ✓

* प्रश्न क्रमांक 2 का उत्तर *

(i) 1 फुट ✓

(ii) चिनोपौडियम अल्बम ✓

(iii) जायान ✓

(iv) दक्षिणी भारत ✓

(v) मैसूर ✓

3



अंक कुल अंक

MP/ST-16 99.1X33.9mmX16

प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 3 का उत्तर *

(i) चिपचिपे द्रव → मिलीबग

(ii) डंक कैपस → अनुचहि मशकम

(iii) विधानिया सोमनिकेरा → सोलेनेसी

(iv) जैट्रीफा करकस → यूफोर्वियेसी

ऑप्टिकल स्क्वायर → सर्वेक्षण

* प्रश्न क्रमांक 4 का उत्तर *

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य





* प्रश्न क्रमांक 5 का उत्तर *

बीजपत्र के आधार पर खरपतवार दो प्रकार के होते हैं।

(1) एक बीज पत्रीय खरपतवार :- ऐसे खरपतवार जिनके बीजों की तीड़ने पर दो भागों में बराबर नहीं बटते एक बीज पत्रीय खरपतवार कहलाते हैं।
उदा० → कांस, सांवा घांस, गीहंसा आदि।

(2) द्वि-बीज पत्रीय खरपतवार :- ऐसे खरपतवार जिनके बीजों की तीड़ने पर बराबर दो भागों में बट जाते हैं।
द्वि-बीज पत्रीय खरपतवार कहलाते हैं।
उदा० → बधुआ, कृष्णनील आदि।

* प्रश्न क्रमांक 6 का उत्तर *

गन्ने के हानिकारक कीट निम्न हैं।

- (i) पायरिल्ला
- (ii) शीर्ष भैदक
- (iii) गुरुदास पुर भैदक
- (iv) तना भैदक



प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 7 का उत्तर * (अथवा)

ब्लॉचिंग → फल एवं सब्जियों को डिब्बाबंदी से पहले उबलते हुए पानी में निश्चित ताप पर कुछ समय तक रखने की क्रिया ब्लॉचिंग कहलाती है।

लाभ :- (i) फलों एवं सब्जियों से लसलसे पदार्थ एवं दुर्गन्ध बाहर निकल जाती है।

(ii) फल एवं सब्जियाँ कोमल एवं नर्म हो जाती हैं।

(iii) फलों से ऑक्सीजन बाहर निकल जाती है।

* प्रश्न क्रमांक 8 का उत्तर * (अथवा)

सहकारिता के निम्न लिखित महत्व हैं।

(i) सहकारिता हमको मिलकर रहने की शिक्षा देती है।

कारिता हमें दूसरों की मदद करने एवं अपने कल्याण की शिक्षा देती है।

(ii) सहकारिता गरीब सदस्यों की निश्चित पूंजी देकर उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने का प्रयास करती है।



प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 9 का उत्तर *

पौधों में नाइट्रोजन की कमी होने पर पौधों में निम्न लक्षण दिखाई देते हैं।

- (i) पौधों की वृद्धि रुक जाती है।
- (ii) पौधों में कीट एवं बीमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है।
- (iii) पौधों की पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं।
- (iv) पौधों की उपज में कमी आ जाती है।

* प्रश्न क्रमांक 10 का उत्तर * (अथवा)

हरी खाद → मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए अनाज वाली व दलहनी फसलों को पौधों में उगाकर उन्हें फूल आने की अवस्था में ही दबा दिया जाता है, जिसे हरी खाद कहते हैं।

महत्व → (i) हरी खाद के प्रयोग से मृदा की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है।

प्रश्न क्र.

(ii) हरी खाद के प्रयोग से सूदा क्षरण नहीं होता है।

(iii) हरी खाद के प्रयोग से 3 फसल उत्पादन बढ़ जाता है।

(iv) हरी खाद के प्रयोग से भूमि की दशा में सुधार होता है।

* प्रश्न क्रमांक 11 का उत्तर * (अथवा)

भारत के शोभाकारी उद्यान निम्न हैं।

उद्यान का नाम	स्थान
(i) मुगल गार्डन	नई दिल्ली
(ii) कतरि पार्क	ववालियर
(iii) लाल बाग	बंगलौर
(iv) ताज गार्ड	आगरा
(v) नेहरु पार्क	इंदौर



* प्रश्न क्रमांक 12 का उत्तर * (अथवा)

अच्छी हरियाली के लिए आदर्श स्थान की निम्न विशेषताएँ हैं।

(i) हरियाली लगाने वाला स्थान ऊँचा होना चाहिए जिससे हरियाली वाले स्थान पर वर्षा का पानी न भरे।

(ii) हरियाली लगाने वाला स्थान पूर्णतः खुला होना चाहिए।

(iii) जहाँ हरियाली लगाई जाती है वहाँ कोई छायादार वृक्ष नहीं होना चाहिए।

(iv) हरियाली लगाने वाले स्थान पर दिन भर धूप रहनी चाहिए।

(v) ऐसे स्थान पर लगानी चाहिए जहाँ जल निकास का उचित प्रबंध हो।



प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 13 का उत्तर *

सिंचाई

शुष्क जल विकास

1. फसलों की कृत्रिम रूप से पानी देने की क्रिया सिंचाई कहलाती है।

1. भूमि में उपस्थित अनावश्यक जल को बाहर निकालने की क्रिया जल विकास कहलाता है।

2. सिंचाई की नालियाँ खेत के धरातल से ऊपर बनाई जाती हैं।

2. जल विकास की नालियाँ धरातल में खेत के नीचे बनाई जाती हैं।

3. सिंचाई करने से खेत में जल का स्तर ऊपर उठता है।

3. जल विकास से खेत में जल का स्तर नीचा हो जाता है।

4. सिंचाई की नालियों की आवश्यकता पूरे वर्ष भर रहती है।

4. जल विकास की नालियों की आवश्यकता केवल वर्षा ऋतु में होती है।

5. सिंचाई के जल का प्रयोग अन्य घरेलू कार्यों में किया जा सकता है।

5. जल विकास से निकला हुआ जल अन्य कार्यों के लायक नहीं रहता है। इसका अन्य कार्यों में उपयोग नहीं कर सकते हैं।



* प्रश्न क्रमांक 14 का उत्तर *

नाइट्रोजन युक्त उर्वरक निम्न हैं।

उर्वरक का नाम	प्रतिशत मात्रा
(i) यूरिया	46 %
(ii) अमोनियम सल्फेट	20.6 %
(iii) अमोनियम नाइट्रेट	25 %
(iv) सोडियम नाइट्रेट	16 %
(v) कैल्शियम नाइट्रेट	15 %

* प्रश्न क्रमांक 15 का उत्तर * (अथवा)

मलर की खेती का वर्णन

वानस्पतिक नाम → पाइसम सटाइवम

फूल → लेग्युमिनेसी



प्रश्न क्र.

- (ii) किस्में \rightarrow (i) अर्किल
 (ii) बौन बिले
 (iii) अपणा
 (iv) शिखा
 (v) जयंती

- (iii) बीज दर \rightarrow (i) अगेती किस्मों से \rightarrow 100-120 Kg/h.
 (ii) महयम किस्मों से \rightarrow 80-90 Kg/h.

- उपज \rightarrow (i) अगेती किस्मों से \rightarrow 30-40 क्विंटल फलियाँ/h.
 (ii) महयम किस्मों से \rightarrow 80-100 क्विंटल फलियाँ/h.
 (iii) दाने की उपज \rightarrow 20-25 क्विंटल/h.

- (iv) दो रींग \rightarrow (i) पावडरी मिलड्यू
 (ii) डाउनी मिलड्यू



* प्रश्न क्रमांक 16 का उत्तर *

लैंगिक प्रसारण के गुण निम्न लिखित हैं।

(i) इस विधि द्वारा तैयार पीछे अधिक प्रतिरोधक क्षमता वाले होते हैं।

(ii) इस विधि द्वारा पीछों की नई किस्में तैयार की जा सकती हैं।

(iii) इस विधि द्वारा तैयार पीछे अलैंगिक विधि द्वारा तैयार पीछों की अपेक्षा आकार में बड़े होते हैं।

(iv) इस विधि द्वारा तैयार पीछों से अधिक फल प्राप्त होते हैं।

(v) जो पीछे वानस्पतिक भागों द्वारा तैयार नहीं होते हैं उन्हें इस विधि द्वारा तैयार किया जा सकता है।

(vi) इस विधि द्वारा पीछे तैयार करने के लिए तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है।

(vii) इस विधि द्वारा तैयार पीछे अधिक वर्षों तक जीवित रहते हैं।



प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 17 का उत्तर * (अथवा)

केला की खेती का वर्णन

(i) वानस्पतिक नाम → मूसा सेपिएन्टम / मूसा पैराडिसीका

कुल → म्यूसेसी

(ii) वानस्पतिक प्रसारण का प्रकार → केले का वानस्पतिक प्रसारण सर्कस द्वारा किया जाता है।

(iii) प्रमुख किस्में → पूवन, शिवस्ता, मोहन भौठा, कोठिया।

(iv) उपज / हेक्टेयर → 150 म्विंटल / हेक्टेयर



प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 18 का उत्तर * (अथवा)

सोयाबीन की खेती का वर्णन

(i) वानस्पतिक नाम → ग्लाइसिन मैक्स

कुल → लेग्युमिनेसी

(ii) उन्नत किस्में → ब्रेग पंजाब-1,
गौख अलंकार
अंकुर

(iii) दुर्वक →
N - 20 से 30 Kg./h.
P - 80 Kg./h.
K - 30 से 40 Kg./h.

(iv) बीज दर / हेक्टेयर → (i) खरीफ ऋतु में → 70-80 Kg/h
(ii) बसंत ऋतु में → 100-120 Kg/h.

(v) उपज / हेक्टेयर → 30-35 क्विंटल / हेक्टेयर



* प्रश्न क्रमांक 19 का उत्तर *

आम की खेती का वर्णन

(i) वानस्पतिक नाम → मैन्गीफेरा इंडिका

कुल → एनाकार्डिएसी

(ii) किस्म → आमपाली
मल्लिका
लंगडा
दशहरी

(iii) प्रसारण का प्रकार → आम का प्रसारण रीपण विधि द्वारा किया जाता है।

(iv) दौ कीट → (i) मिलीवग

(ii) सफेद मक्खी
फल

(iii)

(v) उपज / हेक्टेयर → 120-200 क्विंटल / हेक्टेयर

B
S
E



प्रश्न क्र.

* प्रश्न क्रमांक 20 का उत्तर *

जैम

जैली

1. जैम बनाने के लिए बूदेदार फलों का प्रयोग किया जाता है।

1. जैली बनाने के लिए रसदार फलों का प्रयोग करना चाहिए।

B 2. इसी बनाने के लिए पैकिटिन की आवश्यकता नहीं होती है।

2. इसी बनाने के लिए पैकिटिन की आवश्यकता होती है।

3. इसे बीतलों में गर्म या ठंडा किसी भी अवस्था में भरा जा सकता है।

3. इसे बीतलों में केवल गर्म अवस्था में ही भरा जाता है।

4. इसमें शक्कर की मात्रा खटास के अनुसार मिलाई जाती है।

4. इसमें शक्कर की मात्रा पैकिटिन के अनुसार मिलाई जाती है।

5. जैम अपारदर्शक होता है।

5. जैली पारदर्शक होती है।